साप्ताहिक

सियासत टाइम्स

राष्ट्रीय समाचार पत्र...

१-२८ जुलाई १९९९, रायपुर (म.प्र.) से प्रकाशित अंक १, वर्ष २, पृष्ठ १६, मूल्य ३ रूपये

- प्रधान संपादक
रमीज़ अशरफ

ुदा ए बरतर तेरी नवाजिश
दम-कदम पर तेरा दोगाना

हमारे कदमों में रंग भर दे
कि रस्क करता रहे जमाना

अपनी बात

ख्वाजा ए ख्वाजगां हजरत ख्वाजा गरीब नवाज मोईनुदीन चिश्ती संजरी रदिअल्लाहो अन्हो अजमेर शरीफ के खिदमत में राष्ट्रीय समाचार पत्र सियासत टाइम्स रायपुर (म.प्र.) की खुसुसी इशाअत ''गरीब नवाज विशेषांक'' आप तमामी लोगो की खिदमत में हाजिर है। जैसा कि सियासत टाइम्स का पहला अंक आजादी विशेषांक में अर्ज किया जा चुका था कि आजादी विशेषांक के फौरन ही बाद इंशाअल्लाह ''ख्वाजा गरीब नवाज विशेषांक'' का प्रकाशन किया जायेगा।

ाजादी विशेषांक के फौरन बाद ही इतने कम समय में सियासत टाइम्स का हजरत ख्वाजा गरीब नवाज के खिदमत में इश्क व कीन का नजराना और अकीदतों मोहब्बत का खिराज पेश करने कि सआदत बिला सुबह कोई आसान काम नहीं था ये मुकाम र एक को नही मिलता। लेकिन यकीन कीजिए की हमेशा की तरह सियासत टाइम्स के मेम्बरों की मेहनत, लगन और कड़ा रिश्रम व यकीन का ही नतीजा है कि जिस जाते मुकद्दस के खिदमत में ये नजराना पेश किया जा रहा है वो खुद हम गरीबों के रीब नवाज हैं। और इंशाअल्लाह हमें यकीन व अकीदा है कि हजरत ख्वाजा गरीब नवाज की गरीब नवाजी सियासत टाइम्स- माचार पत्र व इसके मेम्बरों के लिए हमेशा मददगार साबित होगी। व गरीब नवाज के दुआओं के सदके तुफैल से अल्लाह बारक औ तआला राष्ट्रीय समाचार पत्र सियासत टाइम्स को बुलंद मर्तबा अता फरमायेगा। आमीन...

ल्लाह अगर तौफीक न दे तो इन्सान के बस का काम नही
जाने मोहब्बत आम तो है, इरफाने मोहब्बत आम नहीं

कीन जानिए कि हमने अपनी इस्तेंदाद वसायल और सलाहियत के मुताबिक ''ख्वाजा गरीब नवाज विशेषांक'' को तर से बेहतर शक्ल में पेश करने की हर मुमकिन कोशिश की है। हमारी कोशिशें, मेहनत, लगन, परिश्रम और कामयाबी स मंजिल तक पहुँची है यह फैसला करना ख्वाजा गरीब नवाज के ''परस्तारो'' चाहने वालों पर है।

स विशेषांक में हजरत ख्वाजा गरीब नवाज रदिअल्लाहो अन्हो के अलावा उन अजीम मुकद्दस और मुकर्रम हस्तियों के वाक्यात वानें उम्री व उनके कारनामें भी इस अंक में पढने को मिलेंगे जिन्होने अपनी सारी जिन्दगी शम्ऐ रिसालत सल्लल्लाहो अलेहे व ल्लम के इर्द गिर्द परवानावार गुजारें और हक वा बातिल की जंग में इमान व इंसाफ का परचम फजाओं में बुलंद करने के लिए अपना न सुकुन और शरमाए जिन्दगी तक न्यौछावर कर दिया जिसके नतीजे में आज सारा जहां रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलेहे व ल्लम और खुदा ए जुल जलाल के नामों से अजान के जरिए गूँज रहा है और ता कयामत तक गूंजता रहेगा।

लासुबह हजरत ख्वाजा गरीब नवाज रदिअल्लाहो अन्हो और चिश्तिया सिलसिले के मशायखे-केराम ने इंसानी फलाह बहदूद (नेक रास्तों) के खातिर फिसबीहलिल्लाह (अल्लाह की राह में) अपने खून पसीने से तारीख कि अवराक (पन्नों) वो सुनहरी सतरें (लाइन) तहरीर (लिख) कर दी है। जिन्हें ताआबद कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

ब्राने राष्ट्रीय समाचार पत्र सियासत टाइम्स को यकीन है कि हजरत ख्वाजा गरीब नवाज रदिअल्लाहो अन्हो के सदके फैल से हमारी खुसुसी (विशेषांक) इशाअत ख्वाजा गरीब नवाज रदिअल्लाहो अन्हों के चाहने वाले तमाम मुसलमान ों के जहन में जज्बाते इमान और दिलों में हरारते यकीन का इजाफा करेगी व नूर और इरफान की ऐसी बारिश होगी ससे एक दुनियां रौशन व मुनव्वर हो जायेगी। खुदा ए पाक हमें और कारेयिन सियासत टाइम्स के पढने वालो को हजरत वाजा गरीब नवाज की तालिम पर अमल करने कि तौफिक अता फरमाए। आमीन अल्लाहुम्ममा आमीन...आमीन

ारी यह अदना सी कोशिश जो सियासत टाइम्स के ख्वाजा गरीब नवाज विशेषांक के शक्ल में आप तमामी लोगों के सामने आयी है ल्लाह तबारक व तआला इसे हमारे लिए फलांहो निजात और दीन व दुनियां में कामयाबी का जरिया बना दे। अल्लाह तबारक व आला अपने फजलो करम से हम गुनाहगारों को तौफिक अता फरमाए की हम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम के दीन व इन (कानूने शरियत) पर चलते रहें। आमीन... बेजाहया सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलेहे व सल्लम।

वाजा ए ख्वाजगां फख्रे हिन्दुस्तान हजरत गरीब नवाज मोईनुद्दीन चिश्ती हसनी संजरी रदिअल्लाहो अन्हो के करम नवाजिश उनके सदके तुफैल से इंशाअल्लाह वो तआला ''ख्वाजा गरीब नवाज विशेषांक'' के बाद में एक अदना सा इन्सान राष्ट्रीय माचार पत्र सियासत टाइम्स को हर सप्ताह आप तमामी लोगो के खिदमत में पेश करने की हर मुमकिन कोशिश करूँगा। मेरे ल व दिमाग में या यूं कहिए कि मेरा अकीदा था कि ''ख्वाजा गरीब नवाज विशेषांक'' प्रकाशित करने के बाद ही मैं सियासत इम्स को हर सप्ताह आप लोगों कि खिदमत में पेश करूँ और राष्ट्रीय समाचार पत्र सियासत टाइम्स के माध्यम से तमाम सलमानों भाईयों व आम जनता की समस्याओं को शासन-प्रशासन के समक्ष रखकर इंशाअल्लाह उन्हे तमाम समस्याओं से टकारा दिलाने की हर मुमकिन कोशिशे करूंगा। यही सियासत टाइम्स समाचार पत्र का मकसद होगा।

दा हाफिज।

प तमामी लोगो की दुआओं का मुन्तजीर

रमीज अशरफ
प्रधान संपादक

एक अहम बात

आली जनाब,

वैसे तो हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ ''विशेषांक'' का प्रकाशन तो बहुत पहले ही हो जाना था पर इस विशेषांक को ता उम्र सीने से लगा के रखने लायक पेश करने पर काफी समय लगा। इसके लिए मैं आपसे माफी का तलबगार हूँ।

वैसे तो दुनियां में हर चीज़ की कीमत होती है और कुछ कठिन प्रयासों का मूल्य और अधिक होता है। मगर इन सब से बढ़कर अकीदत-मुहब्बत ऐतबार जिसका मूल्य ही ''अमूल्य'' होता है।

हमारा यह प्रयास भी हिन्द के राजा हम गरीबों बेकशों के मददगार गरीब नवाज़ *अता-ए-रसूल हजरत मोइनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी रदिअल्लाहो अन्हो* से मुहब्बत व अकीदा रखने वालों के लिए नजराना ए अकीदत है। इसलिए इस विशेषांक का मूल्य अमूल्य है। उम्मीद है कि हमारा यह विशेषांक आपके घर की रौनक होगी। मेहरबानी करके इस विशेषांक को संभाल कर रखे व तमाम बेहुरमतियों से बचायें।

शुक्रिया।

आपकी दुआओं का मुन्तजीर रमीज अशरफ व सियासत टाइम्स मेम्बरान

ताजदारे हिन्दुस्तान हज़रत ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ र.अ. - संजर से अजमेर तक

- सबीहउद्दीन चिश्ती
(संपादक)

हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ की इस्में गिरामी "मोईनुद्दीन हसन" सैरूल आफताब, मुनिसुल अरवाह, दलीलुल आरेकिन, सैरूल आरेकिन, ख़ज़ीनतुल अस्फिया, सफीनतुल औलिया, सिराजुल औलिया अताए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम नाएबुन्नबी, हिन्दलवली जैसे बेशुमार अल्काब (नामों) से याद किया जाता है।

हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ र.अ. नजीबुत्तरफैन (खालिस) सैय्यद थे इसलिए ओपको जिगरे गोशए रसूल सल.अलै.वस. और नूर दीदए बतुल भी कहा जाता है।

हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ. हज़राते सादात के एक इज़्ज़तदार घराने के चश्मोचिराग थे। आपके वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत ख्वाजा ग्यासुद्दीन हसन र.अ. संजर के रईसों में बेशुमार होते थे। वो दौलते दुनियां के अलावा दौलत फक्र से भी मालामाल थे। अपना सब कुछ राहे-खुदा में वक्फ कर रखा था। और बेशुमार बन्दगाने खुदा उनसे फैज़ पाते थे। ग़रीबों और मिस्कीनों के लिए आपके घर के दरवाजे हमेशा खुले रहते थे। व्यान किया जाता है कि वो एक साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे और हर वर्ग के लोगों को बेहद इज़्ज़त व ऐहतराम की नज़रों से देखे जाते थे।

५५२ हिजरी में आपका विसाल हुआ। आपका मजारे अक्दस बाबे शाम के इलाके में है। इसी तरह से हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ. की वालिदा माजिदा माहनूर रजि. भी एक आबिदा-व जाहिदा ख़ातून थी। बेहद खुदा तरस और खैर-खैरात वाली थी। आपकी कुन्नियत "उम्मुलवरा" थी। बीबी माहेनूर का वतने मुबारक असफहान था और आपकी परवरिश खुरासान में हुई। हज़रत ख़्वाजा गरीब नवाज़ के अलावा दो और परज़न्द भी आपसे हुए थे। हज़रत ख्वाजा मोईनुद्दीन संजरी र.अ. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अवाम में संजरी के बजाए चिश्ती-अजमेरी मशहूर हैं। आपका अजमेरी कहलाए जाना तो इस सबब से है कि आपने अपने उम्रे अज़ीज़ के चालीस बरस अजमेर में गुजारे लेकिन चिश्ती मशहुर होने का सबब ये है कि आपके पीरो तरीक़त हज़रत शेख उस्मान हारूनी र.अ. चिश्तीया के बुज़ुर्ग थे। चिश्त हिरात के पास एक क़स्बा है मौजुदा जुगराफिया (भूगोल) और नक्शों में इस मुकाम का नाम शाक्लां लिखा जाता है। इस सिलसिले का नाम चिश्तीया क्यों मशहूर हुआ?

इसके बारे में ये रवायत है कि हज़रत अबु इस्हाक शाम र.ह. जो छः वास्तो में हज़रत शेख उस्मान हारूनी र.अ. के और सात वास्तों में हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ. के पीरो तरीकत हैं कस्बा "चिश्त" के रहने वाले यानि चिश्ती के थे। इसी सबब से उन्हें सालारे चिश्तीया कहा जाता है और उनका सिलसिला भी चिश्तीया कहलाता है। इसी निसबत से इन बुज़ुर्गों के खलीफा और मुरीद भी चिश्ती के लक़ब से मशहूर हो गए। और इस सिलसिले ने "बकाएदवाम" का ताज पहन लिया।

मुस्तनद रिवायत के मुताबिक आप चौदह रज्जबुल-मुरज्जब ५३६ हिजरी दो शम्बा (पीर) के दिन सुबह सादिक़ के वक्त संजर में जलवागर हुए। आपकी वालिदा माजिदा की जुबानी एक रिवायत व्यान की जाती है कि जिस दिन से मुझे हमल के आसार नज़र आये तो इत्मिनान और खुशियों से मेरा दिल भर गया और हमारे घर में खैर व बरकत और हर चीज़ की बहुतात हो गयी। जब मोइनुद्दीन हसन के जिस्म में "रूह फुंकी तो मुझे ये महसूस होता था कि मेरे जिस्म में कलम-ए-तय्यबाह" का विर्द (जाप) हो रहा है जिस सुबह को मोइनुद्दीन पैदा हुए हमारे घर में एक अजीब नूर फैल गया और मैंने अपने इर्द-गिर्द (चारों तरफ) बेशुमार नूरानी सूरतों को देखा। थोड़ी देर बाद ये नज़ारा गायब हो गया। फिर मैंने अपने नूरानी बच्चे की तरफ नज़र की तो ये देखकर हैरान रह गयी कि वो "सज़्दे" में पडा है। मैंने उसे उठाकर गोद में ले लिया। जब उपर निगाह उठाई तो हज़ारों नूरानी सूरतों को परे बंधे हुए देखा उनके लिबासे फाख्रा से मस्त करने वाली खुशबू आ रही थी। मैं हैरान थी कि ये लोग कौन हैं? इतने में उन लोगों में एक शख्स ने मुझे मुखातिब करके कहा - "ऐ खातुन, मुबारक हो! आज़ तेरे घर मोईनुद्दीन की विलादत हुई है। हम लोग इस जमाने के "अक्ताबो अव्दाल" हैं और तुझे मुबारकबाद देने आए हैं।" इसके बाद ये लोग फौरन मेरी नज़रों से गायब हो गये।

हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. अ. के लड़कपन के जमाने की कई औरत अपने शेरखार बच्चे के साथ आपके यहाँ आई और जब उस औरत का बच्चा दूध के लिए रोता तो आप अपनी वालिदा मोहतरमा को इशारा करते जिसका मतलब यह होता कि वह अपना दूध उस बच्चे को पिला देती। जब बच्चा दूध पीता तो आप बहुत खुश होते। तीन साल की उम्र में आप अपने हमउम्र बच्चों को अपने यहां बुलाते और उनको खाना खिलाकर बहुत खुश होते। एक मर्तबा हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ रह. अ. ईद के मौके पर साफ सुथरा कपड़े जेबतन फरमाकर ईदगाह की तरफ जा रहे थे। रास्ते में आपकी निगाह एक लड़के पर पड़ी, वो लड़का अंधा था और फटे पुराने कपडे पहने हुए था। ह. ख्वाजा र. अ. को अफसोस हुआ। चुनांचे उन्होंने अपने नफीस कपड़े उतारकर उस गरीब और अन्धे लड़के को दे दिया। फिर दूसरे कपड़े पहन कर उस लडके के साथ ईदगाह गये। उसी दिन से आपको ग़रीब नवाज़ कहा जाने लगा। हज़रत ख्वाजा रह. अ. की इब्तिदाई तालीम घर ही पर वालिद बुज़ुर्गवार के ज़ेरे साये हुई। आपने ९ बरस की उम्र कुराने पाक हिफ्ज़ किया। उसके बाद आपको संजर के एक मदरसा में दाखिला मिल गया। जहां आपने तफ़सीर, हदीसा और फेक़ह की तालीम हासिल की।

जब हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ की उम्र ११ बरस की हुई तो वालीद बुजुर्गवार ह. सैय्यद ग्यासुद्दीन हसन ने इस दुनिया ऐ फानी को "लब्बाऐक" कहा। वालिद रह. अ. के तर्के में आपको एक बड़ा बाग मिला जिसमें एक पनचक्की भी थी। इस बाग़ की देखरेख आप खुद ही करते थे। उसकी आमदनी से गुज़र आसानी से हो जाती थी।

एक दिन बाग में दरख्तों को पानी दे रहे थे कि एक दूरवेश तशरीफ लाए। उनका नाम इब्राहीम कलंदरी र.अ. था। वह मजजुब थे। मजजुब अल्लाह के खास बन्दे होते हैं। और हर वक्त इश्के इलाही के जलवों में गुम रहते हैं। उन्हें अपने सर पैर का कुछ होश नहीं रहता। जब वो ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती र.अ. के बाग में तशरीफ लाए तो आप इन्तेहाई गर्मजोशी से उनका इस्तकबाल किया। एक हरे भरे और घने दरख्त के साए में उन्हें बिठा दिया और एक पके अंगूर का गुच्छा तोडकर उनके सामने रखा दिया। हज़रत इब्राहिम कलंदरी र.अ. उनकी मेहमान नवाजी से बहुत खुश हुए। उन्होंनें अपनी झोली से खल्ली का एक टूकड़ा निकाला और अपने दातों से चबाकर ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती र.अ. को दे दिया। आपने बिला तकल्लुफ ये चबाई हुई खल्ली खा ली। उसे खाते ही दिल की दुनिया बदल गयी और सिना अनवारे इलाही से भर गया। दुनियावी बातों से नफरत हो गयी और रग-रग में इश्के इलाही का दरिया बहने लगा। हज़रत इब्राहीम कलंदरी रह. अ. ने तो अपनी राह ली और हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ. अपनी इम्लाक (सम्पत्ती) ठिकाने लगाने की फिक्र में लग गए। दो-तीन दिन में सारी जायदाद बेच डाली और उसकी क़िमत राहे खुदा में लुटा दी। और फिर वालिदा साहिबा से इजाज़त लेकर तलाशे हक और इल्म हासिल करने के लिए घर से निकल पड़े। सन् ५५५ हिजरी में जब ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ. अपने वतने अज़ीज़ से रूखसत हुए तो आपकी उम्र १५ साल की थी। उस ज़माने में आजकल की तरह आमदोरफ्त के ज़रियों का तसव्वूर भी नहीं किया जा सकता था। रास्ते बेहद खतरनाक व खराब थे। कदम-कदम पर भूख प्यास और लुटेरों का खौफ लगा रहता था। इस छोटी सी उम्र में ख्वाजा ग़रीब नवाज़ र.अ. का बिल्कुल तन्हा घर से निकल खड़ा होना बड़ी जुर्रत व हिम्मत का काम था। लेकिन जब दिल में तड़प और जज़्बा हो तो सब मुश्किलें छोटी नज़र आती हैं।

आप खुदा के तवक्कल पर समरकन्द जाने वाली सडक पर चल दिये। समरकन्द व बुखारा में उन दिनों बड़-बड़े क़ाबिल आलिम मौजूद थे। जिनमें हज़ारों इल्मेदिन की तलाश में निकले लोग फैज़याब हो रहे थे। ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. अ. भी रास्ते की सख्त गर्मी झेलते हुए समरकन्द आ पहुँचें और वहां के नामवर मौलाना शरफुद्दीन की शागिर्दी इख्तियार की।

उलमें जाहिरी हासिल करने के बाद आप समरकंद से बुखारा पहुंचे और वहां के शोरए आलम मौलाना हिसामुद्दीन बुखारी रह. अ. की शागिर्दी इख्तियार की। मौलाना हिसामुद्दीन बुखारी र.अ. ने बड़ी मेहनत और शौंक से आप को तालीम दी। उलुमे जाहिरी की तकमील के बाद आपके दिल में तकमिले बातिनी की तड़प पैदा हुई। और एक दिन मुर्शीदे कामिल की खोज में बुखारा से निकल पड़े। ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. अ. ५५८ हिजरी में हारून पहुंचे। ख्वाजा उस्मान हारूनी र.अ. ने देखते ही भाँप लिया कि इस नौजवान की पेशानी में नूरे विलायत चमक रहा है। इसको एक दिन आस्माने विलायत पर आफताब बनकर चमकना है।

चुनांचे उन्होंने फौरन ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. अ. को अपने मुरीद के हल्के में लेने का इरादा कर लिया। ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. अ. बग़दाद में ह. ख्वाजा उस्मान हारूनी र.अ. के मुरीद हुए इस बैअत का हाल आपने खुद इस तरह बयान किया है। "ये फक़ीर बग़दाद में ख्वाजा जुनैद बुग़दादी की मस्जिद में हज़रत शेख उस्मान हारूनी र.अ. के खिदमत में हाज़िर हुआ। उस वक्त
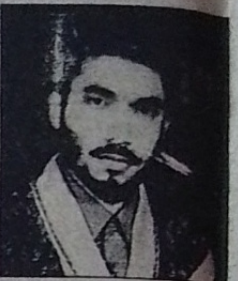
आपकी मजलिस में बहुत से दूरवेश हाज़िर थे फकीर ने ज्यों ही बैअत का इरादा किया।"

हज़रत ने फरमाया क़िबला रू होकर सूरए बक़रह पढ़ो। उससे फारिग हुआ तो फरमाया २१ बार दरूद पढ़ो। फकीर ने हुक्म की तामिल की। फिर हज़रत ने आसमान की तरफ निगाह की और फकीर का हाथ पकडकर फरमाया आओं मैं तुम्हें खुदा तक पहुंचा दूं। इसके बाद हज़रत ने अज़ीज़ के बाल कैंची से तराशे और कुलाहे चादर तुर्की फकीर के सर पर रखी फिर अपना खास कम्बल किया और हुक्म दिया कि हज़ार बार सूरए इखलास पढ़ो। अज़ीज़ ने हुक्म की तामील की। फिर हुक्म दिया- अब जा आज दिन-आज की रात मुजाहिदा कर। फकीर ने एक दिन और एक रात अल्लाह की याद में गुजारी फिर हाज़िर हुआ तो फरमाया बैठ जाओ। अज़ीज़ी बैठ गया तो फरमाया उपर देख और बता तू कहां तक देख सकता है। फकीर ने उपर देखकर अर्ज किया "अर्शे मोअल्ला" तक निगाह जाती है। फिर फरमाया निचे देख कहां तक निगाह काम करती है। फकीर ने अर्ज किया "तहतुस्सरा" तक सबकुछ अज़ीज़ के सामने है फिर फरमाया हजार बार सूरए अख़लास पढ़ो। फकीर जब उससे फारिग हुआ तो हुक्म हुआ कि उपर देख की कहां तक

…क सकता है। फकीर ने उपर देखा - …हिज़ाबे अज़मत" तक। अज़ीज़ के सामने …शन है। फिर फरमाया अपनी आंखें बंद कर लो। आंखे बंद कर ली फिर इर्शाद हुआ खोल दो। फकीर ने ऐसा ही किया। अब हज़रत ने अपनी से अंगुलियां खोलकर फरमाया इनमें से तुझे कहां तक दिखाई देता है। फकीर ने अर्ज किया १८००० आलम दिकाई दे रहे हैं। हज़रत ने फरमाया अब तेरा काम हो गया है। यानि तू मर्तबा कमाल तक पहुंच गया फिर आपने पास पड़ी ईंट की तरफ ईशारा करके कहा इसे उठा लो। फकीर ने ईंट उठाई तो उसके निचे कुछ दिनार पडे पाये। हुक्म हुआ ये दिनार उठा लो और इन्हें फकीरों पर सदका कर दे।

जब ख्वाजा गरीब नवाज़ रह. अ. ने मुजाहिदाद व रियाजाद की तकमिल हो चुकी तो आप में पिरो मुर्शीद ख्वाजा उस्मान हारूनी र.अ. ने हज का इरादा किया। और हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ रह. अ. को भी अपने हमराह ले लिया। बैतुल्लाह शरीफ पहुंचकर तवाफ किया और तवाफ से फारिग हो "मीजाबे रहमत" के नीचे ख्वाजा गरीब नवाज रह. अ. का हाथ पकड कर बारगाहे इलाही में दुआ मांगी की मौलाए करीम मेरे मोईनुद्दीन हसने र.अ. को अपनी बारगाह में कुबुल फरमा। उसी वक्त गैब से आवाज आयी।

"मोईनुद्दीन हमारा दोस्त है। हमने उसे कुबुल कर लिया और उसे इज्जत बख्शी।"

हज्जबैतुल्लाह से फारिग होकर ख्वाजा उस्मान हारूनी र.अ. और ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रह. अ. मदीना-ए-मुनव्वरा पहुंचे और सीधे सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रोज़ ए पर हाज़िर हुए। ख्वाजा उस्मान हारूनी ने ग़रीब नवाज़ को हुक्म दिया मोईनुद्दीन तू आक़ा दो जहाँ की बारगाहें में सलाम अर्ज करो। ख्वाजा गरीब नवाज़ रह. अ. निहायत अदबो एहतराम के साथ कहा - "अस्सलातो वस्सलामो अलैकुम या सय्यदुल मुरसलीन या खातें मुन्नबीइन"। रोज़ए अक्द.. से आवाज़ आयी "वालेकुम अस्सलाम या कुतुबुल मशायख" उसके बाद ख्वाजा उस्मान हारूनी र.अ. ने ख्वाजा गरीब नवाज़ रह. अ. को दरूद शरीफ पढ़ने की तलक़ीन की। आप ईशा तक दरूद शरीफ पढ़ते रहे। नमाज़े ईशा के बाद आंख लग गयी तो ख्वाब में रसूले अकरम सल. अलै वसल्लम की ज्यारत नसीब हुई। हुजुर ने इर्शाद फरमाया "मोईनुद्दीन हमने तुमको बाहुक्मे इलाही सुल्तानहिन्द मुकर्रर किया अब तुम अपने मुर्शीद से हिन्दुस्तान जाने की इजाजत तलब करो।

सुबह होते हुए हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ र.अ. अपने मुर्शीदे गिरामी के खिदमत में ख्वाब का वाक्या बयान किया। ख्वाजा उस्मान हारूनी र.अ. ने अपने महबूब मुरीद को दरबारें रिसालत में कबुलियत का हाल सुनकर बहुत खुश हुए और ख्वाज़ा गरीब नवाज़ र.अ. ने आंख बंद की और मुर्शीदे कामिल ने चंद लम्हों के सारे हिन्दुस्तान की सैर करा दी।

जिस वक्त ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अपने पीरो मुर्शीद से रूखसत हुए। उस वक्त आपकी उम्र शरीफ ५२ साल की थी आप सफर में अक्सर मखलुक से किनारा कस रहे और कब्रस्तान में क्याम किया करते अस्फहान पहुंचकर हज़रत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को अपने मुरीद में शामिल किया फिर कुतुब साहेब ख्वाजा गरीब नवाज र.अ. के साथ ज्यारते हरमैन शरीफैन के लिए रवाना हुए और काबा की ज्यारत से मुसर्रफ हुए।

एक रोज की बात है के गैब से आवाज आयी *"ऐ मोईनुद्दीन हम तुमसे खुश हैं और हमने तुम्हें बख्स दिया जो चाहे मांग ताकि अता किया जाये" हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज की मुसर्रत की कोई इन्तेहा ना रही आपने अपना सर ज़मीन पर रख दिया और अर्ज किया "ऐ बारगाहे आला मोईनुद्दीन के तमाम मुरीदों को बख्स दे आवाज आई ऐ मोईनुद्दीन मैंने तेरे मुरीद और तेरे सिलसिले के जो कयामत तक मुरीद होंगे बख्स दूंगा।*

अलगर्ज बारगाहे रिसालत से हुक्म मिलते ही आप हिन्दुस्तान की तरफ चालीस दर्वेश साथियों की मुकद्दस जमाअत के साथ रवाना हो गये आपका यह मुबारक सफर हज़ारों बर्कात और अजीब व गरीब करामत से नामुर था जिस शहर से आप गुज़रते अकिआ अल्लाह से आप मुलाकात फरमाते अवाम को आपने रूहानी फैज़ से फैज़याब फरमाते जाते यहाँ तक के आप लाहौर पहुंच गए। फिर लाहौर से देहली आए यहाँ चन्द रोज क़याम फरमाए। जितने दिन भी आप देहली में रहे कयामगाह पर खलुके खुदा की भीड लगी रहती थी। फिर आप अजमेर के रास्ते पर चल दिये।

रास्ते में सामाना एक जगह है जो पटियाला के करीब है कयाम फरमाया यहाँ पृथ्वीराज के मुलाजिम मौजुद थे। जो पृथ्वीराज के बताये हुए हुलये के मुताबिक किसी शख्स को तलाश कर रहे थे दरअसल में पृथ्वीराज की माँ ने ख्वाजा गरीब नवाज़ की आमद से बारह साल पहले अपने बेटे को नजुमियों की इस पेशगोई से आगाह करा दिया था के इस हुलये का आदमी तेरे देश में आयेगा और तेरी हुकुमत ताहोबाला (तबाह) कर देगा। इस पेशागोई से राजा फिक्रमंद रहने लगा और राजा ने इस शख्स की तलाश के लिए अपने आदमी जगह-जगह तैनात करा दिए।

जब ख्वाज़ा गरीब नवाज सामने पहुंचे तो राजा के आदमी ने उन्हें पहचान कर रोकना चाहा। हज़रत ख्वाज़ा ने मोरकबा किया तो बारगाहे रिसालत से हिदायत हुई ठहरना मुनासिब नहीं है और आप अपने साथियों समेत अजमेर रावाना हो गये। हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ ५८९ हिजरी में अजमेर शरीफ तशरीफ लाये। उस वक्त पृथ्वीराज की हुकुमत थी। जब आपने एक जगह कयाम फरमाना चाहा तो पृथ्वीराज के आदमियों ने आपको ठहरने न दिया और कहा आप यहाँ नहीं बैठ सकते यहाँ राजा के ऊँट के बैठने की जगह है। आपने फरमाया अच्छा अगर ऊँट बैठते हैं तो बैठे रहें। यह कहकर आप चल दिए और अना सागर के किनारे कयाम फरमाया। ऊँट हस्बे मामुल अपनी जगह पर आये और बैठ गये। लेकिन वह ऐसे बैठे की बडी कोशिशों के बावजुद भी अपनी जगह से ना उठ सके सारबान बहुत हैरान हुए। दरोगा ने उस वाक्ये की इत्तेला पृथ्वीराज को दी। राजा ने हुक्म दिया कि सारबान ख्वाजा से माफी मांगे चुनांचे आपकी खिदमत में पहुँचकर मुआज़रत खाह हुए। और आपने उनकी मुआज़रत कुबुल फरमाते हुए कहा अच्छा जा ऊँट खड़े हैं। गये सारबान जब वापस आए तो उन्होंने ऊँट को खड़े पाया। ऊँट वाले मैदान से उठकर ख्वाज़ा र.अ. और आपके साथी अना सागर के किनारे पहुँच गए। अना सागर बहुत बड़ा व खूबसूरत तालाब था। जो राजा अनादेव ने बनवाया था। तालाब के चारों तरफ मंदिर थे। उनमें एक बहुत बड़ा मंदिर राजा और उसके खानदान की बुतपरस्ती के लिए सुरक्षित था। और उसके खर्चों के लिए गाँव की आमदानी वक्फ थी। कहा जाता है उस मंदिर में सारी रात सैकड़ों मन तेल जलता था। और सैकडों पुजारी और महन्त उन मंदिरों में हर वक्त मौजुद रहते थे। उन मंदिरों के करीब की जगह से अना सागर को भी एक पवित्र तालाब समझा जाता था।

अनासागर के किनारे ठहरने के बाद हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज र. अ. ने तबलीगे इस्लाम का नाम जोर शोर से शुरू किया। आपके बेनज़ीर अख्लाके हस्ना में कुछ ऐसी कशिश थी कि बीसीयों लोग आपकी खिदमत में हाज़िर होकर इस्लाम के दायरे में दाखिल हो गए। कानुने फितरत है कि हक को कुबुल करना सिर्फ उन्हीं लोगों को नसीब होता है जिन्हें अल्लाह तआला कल्बे सलीम अता करता है। जो लोग पैदायशी बेरहम और बदबख्त होते हैं उन पर तबलीगे हक का उल्टा असर होता है। और उनके दिलों की संगदिली और स्याही में और भी बढ़ोत्तरी हो जाती है। अल्लाह तआला उनके दिलों पर ताला डाल देता है। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ की तकलीमी कोशिश की बदौलत मुबारक और नेक रूहें खुद ब खुद इस्लाम की तरफ माएल होने लगी। के जिन अज़मेर की ज्यादा आबादी सर से पांव तक कुफ्र व शिर्क और गुनाह में डूबी हुई थी।

कुफ्रीस्तान में सदाए तौहीद को सुनकर उन बदबख्तों में बेचैनी पैदा हो गई। और वह हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ के दुश्मन हो गये। पृथ्वीराज भी इन दूर्वेशों के हालात सुन चुका था। वह अजमेर में उनकी मौजुदगी सख्त नापसन्द करता था। लेकिन उसने ताक़त के जरिए उन्हें अज़मेर से निकालना मुनासिब ना समझा। अजमेर के सबसे बड़े महन्त का नाम रामदेव था। वह एक लम्बा चौड़ा औरकई तांत्रिक विद्याओं का माहिर था। राजा और अजमेर के लोग उसके बहुत श्रद्धालु और भक्त थे। जिसे पृथ्वीराज ने अपनी सुरक्षा के लिए लगा रखा था। अजमेर के लोग महन्त रामदेव के पास आये उससे इल्तिजा की के इन हक़ परस्तों दूरवेशो को अजमेर से निकालने का जतन करें। क्योंकि वह ना सिर्फ हमारे धर्म के खिलाफ प्रचार कर रहा है बल्कि अना सागर का पानी भी भ्रष्ट कर रहा है।

दुसरी तरफ महन्त के पास राजा का संदेश पहुँचा कि अपनी ताक़तों को इस समय काम में लाओ और इन दूर्वेशों को किसी भी तरकीब से अजमेर से निकाल दें। महन्त उस वक्त खड़ा हुआ। बातिल परस्तों के एक भारी गिरोह के साथ सीधा हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की कयामगाह पर पहुंचा हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. ने जैसे ही नज़र उठाकर महन्त की तरफ देखा उसकी काया ही पलट हो गई। और दिल की तमाम कुदरत धुल गयी। उसी वक्त हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ के कदमों पर गिर पड़ा और आपके दस्ते हक़ परस्तों पर इस्लाम कुबुल किया। उसके साथी यह वाकेआ देखकर दमबखुद रह गये और उल्टे पाँव वापस चले गए। रामदेव को इस्लाम में दाखिल करने के बाद हज़रत ख्वाँजा गरीब नवाज़ र. अ. ने उसका नाम रामदेव की बजाय शादी देव रख दिया। शादी देव के इस्लाम कुबुल करने से राजा और प्रजा को बहुत नागवार गुजरा वह समझे यह दूरवेश जादुगर है। उसके जादु का तोड जादु से किया जा सकता है। उन दिनों हिन्दुस्तान में एक बड़े जोगी जयपाल की बड़ी शोहरत थी। जयपाल दर हकीकत से हर और इस्तदराजी (चमत्कार) ताकत में हिन्दुस्तान में अपना जवाब नहीं रखता उसने कई साल की मेहनत के बाद इल्मे सेहर (जादु) में कमाल पाया था। उसके सैकड़ों शागिर्द और चेले थे। और वह हिन्दुस्तान में बेपनाह असर बाइक्तिदार का मालिक था। बड़े-बड़े ताकतवर राजा भी उसकी इज्जत करते थे। कहा जाता है कि राजा पृथ्वीराज भी कुछ दिनों जयपाल का शार्गिद रहा था और वह उसक साहिराना कमाल (जादु) से बखुबी आगाह था। अपनी तंग नज़री की वजह से उसने हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र.अ. को भी एक बार साहिर (जादूगर) समझा।

शादी देव के इस्लाम कुबुल करने के बाद राजा के ख्याल में सिर्फ जयपाल ही उन दूर्वेशों को हरा सकता था। इसलिए उसने सब हालात जयपाल को कहला भेजा और उसे फौरन अजमेर पहुंचने के लिए कहा गया। जयपाल यह हालात सुनकर फौरन अपने सैकड़ों शार्गिदों के साथ अजमेर पहुंचा। अजमेर में उसका दाखिला बड़ी शान से हुआ वह जादु के जोर से हिरन की खाल पर बैठकर हवा में उड़ता हुआ आया। उसके शार्गिद शेरों पर सवार थे और उनके हाथ में साँप के कोड़े थे। पृथ्वीराज और अजमेर के राजा नवाबों ने उन्हें हाथो हाथ लिया। और उनसे हज़रत *ख्वाजा गरीब नवाज़ र.अ. और उनके साथियों को नेस्तानाबूद (तबाह) करने* कहा। जयपाल को अपने जादूगरो कमालात पर बड़ा नाज़ था। वह चन्द पन्डरियां और बेसरो सामान फकीरों को क्या खातिर में लाता। उसी वक्त अपने शार्गिदों के साथ हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की कयामगाह की तरफ बढ़ा अपने हाथों में आग उगलने वाले साँप पकड़े हुए था और कुछ अपने हाथों में आग के चक्कर और अंगारें बरसा रहे थे। ज़मीन उनके दहशत फैलाने वाले हमलों से काँप उठी थी और सारी फिज़ां (वातावरण) में एक भयानक तूफान को देखा और अपने साथियों के चारों तरफ हिसार (घेरा) खींच दिया। जादूगरों का सारा जादु उस हिसा के पास आता और बेकार हो

जाता था। जादुगरों ने बहुतेरेन जतन किए कि उनका जादु मुसलमानों पर असर करे। लेकिन हिसार के अन्दर हजरत ख्वाजा गरीब नवाज र.अ. और उनके साथी बेहद इत्मीनान के साथ यादे इलाही में लगे रहे। और उन पर जरा भी असर नहीं हो रहा था। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. ने समझाया कि अपनी हरकतों से बाज़ आ जाओ और दुर्वेशों के सुकन में बाधा ना डालो। लेकिन जादुगर इस बात को भला कब मानते। बराबर शरारतों में लगे रहे।

आखिर हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ र.अ. ने मुट्ठी भर मिट्टी उठाई और अल्लाह का नाम लेकर जादुगरों की तरफ फेंकी। देखते ही देखते उनके तमाम जादु के खेल भस्म होकर रह गए। ना कोई शेर रहा ना कोई साँप और ना कोई आग के चक्कर और गोले राख के ढ़ेर बनकर रह गये। और जादुगर अचंभें में पड़कर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। जयपाल ने अपने सारे मंत्र पढ़ डाले। लेकिन कोई मंत्र कारामद न हुआ। मायूस (निराश) होकर उसने अपना आखरी दाँव इस्तेमाल किया। और जादु के जोर से हवा में उड़ कर हजरत ख्वाजा गरीब नवाज र. अ. के कयामगाह पर उड़ने लगा। उसका ख्याल था कि आस्मानी फिज़ां से हजरत ख्वाजा गरीब नवाज र. अ. पर आग बरसाएगा। लेकिन उसका हवा में उड़ना ही था कि हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ ने अपनी खड़ाऊ उसके पिछे उछाल दी। यह खड़ाऊ उपर जाते ही जयपाल के सर पर पड़ने लगी और उसे नीचे आने पर मजबूर कर दिया।

नीचे आते ही उस पर यह बात खुल गई कि उसका मुकाबला किसी मामुली दुर्वेश से नहीं है बल्कि यह दुर्वेश अल्लाह का खास बन्दा है। अल्लाह ने उस जोगी को समझदार दिल अता किया था। उसने खुले दिल से हार मान ली और हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज र. अ. के कदमों पर गिर गया और अपनी खताओं और गुस्ताखी की माफी माँगी।

हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. ने उसे गले लगा लिया जयपाल ने उसी वक्त इस्लाम कुबुल करके मुरीदों में शामिल हो गया उसके सैकड़ों शार्गिदो ने अपने उस्ताद की पैरवी की और "कलमा-ए-तैय्यब" पढ़कर दायर-ए-इस्लाम में दाखिल हुए। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. ने जयपाल का इस्लामी नाम अब्दुल्लाह रखा। अब्दुल्लाह ने हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की खिदमत में रहकर "इस्लामी उलुम" (विद्याएं) और मुजाहिदात व रियाज़ात किए। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की खास तवज्जह से बहुत थोड़े अर्से में दर्जए विलादत (वली का दर्जा) तक पहुंच गए। और आपने खरकए खिलाफत पाया। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. के खुल्फा में जिस अब्दुल्लाह ब्याबनी का नाम पाया जाता है। वह यही अब्दुल्लाह (पूर्व जयपाल) है। अब्दुल्लाह ने बियाबान (जंगल) को अपना ठिकाना बनाया और अपनी जिन्दगी का यह मिशन बना लिया कि भूले भटके मुसाफिरों को रास्ता दिखाकर और उनकी खिदमत कर उन्होंने लंबी जिंदगी पाई। इस वाकए के बाद हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. अनासागर से उठकर उस जगह तशरीफ लाए जहाँ आज कल दरगाह का अहाता है। यह जगह शादी देव की मिल्कियत थी। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. ने राजा पृथ्वीराज को भी दावते इस्लाम दी लेकिन उसने कुबुल न की और हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. से काफी दुश्मनी रखने लगे। बड़ी मीखलाक करने लगा हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. के बेशुमार करामतें जो राज़ न जाहिर होते थे। देखते हुए भी राजा अपनी शरारतों से बाज़ न आया और आप को अज़मेर से निकाल देने का हुक्म दिया।

लेकिन आपने उस हुक्म पर सिर्फ यह इर्शाद फरमाया हमने पिथौरा को जिन्दह मुसलमानों के हवाले कर दिया है। यह पेशगोई सही साबित हुई।

सुल्तान सहाबुद्दीन गौरी ने पिथौरा के खिलाफ 587 हिजरी में दो हमले किए और आखरी हमले में पिथौरा गिरफ्तार होकर मारा गया। जिस मुकद्दस फर्ज को अंजाम देने के लिए हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. हिन्दुस्तान तशरीफ लाए थे। तबलीगे हक़ का काम बहुत ही काएदे के साथ आगे बढ़ाया और हिन्दुस्तान में इस्लाम की जड़े आप ही ने मजबूत की। इसलिए हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. को हिन्दुस्तान का पहला दाई कहा जाता है। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. का हिन्दुस्तान में तशरीफ लाने का मकसद ही यही था कि अल्लाह के दीन को इस मुल्क में फैलाए। इसी वजह से आपने अजमेर को अपना मर्कज़ (कन्द) बनाया। जो सियासी और मज़हबी लिहाज़ से उस वक्त सारा हिन्दुस्तान मर्कज़ था। कुफ्र व शिर्क के इस मर्कज़ में चंद सालों के अन्दर हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की तबलीगी कोशिशों के बदौलत "कालल्लाह व कालर्रसूल" की सदाएं गुंजने लगी बुत मंदिर विरान हो गए। और अज़मेर इस्लाम फैलाने का एक बड़ा मर्कज़ (विशाल केन्द्र) बन गया। हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की तबलीगी कोशिशों के बदौलत हिन्दुस्तान में एक अजीमुश्शान रूहानी व समाजी इन्कलाब ने जन्म लिया और सलिए आपकी हकीकत में नाएब रसूलल्लाह फिलहिन्द कहा जाता है। हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. की सालों साल जद्दो जहद के बाद अल्लाह तआला ने इसमें कामयाबी अता फरमायी और आखिर वह वक्त आ पहुँचा कि आप हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. इस आलमें फानी से तशरीफ ले जाएँ।

विसाल की शब आप ईशा की नमाज़ पढ़कर अपने हुजरे (कमरे) तशरीफ ले गये और अन्दर से दरवाज़ा बंद कर लिया। हुजरे के बाहर खानक़ाह के लोगों को रात भर जोर जोर से पैर पटकने की आवाज़ आती रही इसकी हालत ऐसी थी जैसे वज्द (मस्ती) में पैर पटका जाए खादिमों ने यही समझा हज़रत वज्द में है। रात आखिरी हिस्से में यह आवाज आनी बंद हो गई। फजर के नमाज़ के वक्त खादिमों ने हुजरे का दरवाजा खटखटाया लेकिन अंदर से कोई आवाज़ न आई किसी तरह दरवाजा खोलकर लोग अंदर दाखिल हुए तो देखा कि हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ र. अ. विसाल व हक हो चुके हैं।

और हजरे की दीवार व दर गवाही दे रहे हैं

"खुदा का दोस्त खुदा की मुहब्बत में फौत हुआ"

विसाल की खबर दूर-दूर तक फैल गयी। और हर तरफ से कोहराम मच गया।

खादिमों ने गुस्ल दिया हजारह अक़ीदत मन्दों के नाम आँखों से इस आफतों बेहियातु की उस जगह दफन कर दिया जहाँ मजारपुर अनवार है।

घोषणा पत्र

स्वीकृति भारत सरकार आर.एन.आई. (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल	:	सियासत टाइम्स कार्यालय, के.के. रोड मौदहापारा, रायपुर (म.प्र.)
प्रकाशन अवधि	:	प्रति सप्ताह
स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक का नाम	:	रमीज़ अशरफ
क्या भारतीय नागरिक है ?	:	भारतीय
क्या विदेशी हैं तो मूल देश ?	:	भारतीय
पता	:	छत्तीसगढ डीजल्स के सामने, मौदहापारा, रायपुर 492 001 (म.प्र.)
संपादक का नाम	:	सबीहउद्दीन चिश्ती
क्या भारतीय नागरिक है ?		भारतीय
क्या विदेशी हैं तो मूल देश ?	:	भारतीय

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के प्रतिशत अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो

- रमीज़ अशरफ (इनके अलावा कोई नही)

घोषणा पत्र संबंध : नियमित प्रकाशित करना

मैं रमीज अशरफ एतद घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार उपर दिये गये विवरण सत्य है।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(रमीज़ अशरफ)

हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह

हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की शोहरत एक आलम में फैली हुई थी। हकीकतन हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती निहायत अजीम मर्तबे के बुजुर्ग थे आपको सिलसिलिए चिश्तियां के बुजुर्गगान में खास मुकाम हासिल है। हजरते ख्वाजा मौदूदी को सिसिलए चिश्तियां का मोरिसे आला (बानी) कहा जाता है। आप हजरत ख्वाजा गरीब नवाज रहमतुल्लाह अलैह के पीरो मुर्शीद के पीरो मुर्शीद हजरत ख्वाजा हाजी शरीफुद्दीन जिंदानी के पीरो मुर्शीद है।

हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती चार सौ तीस हिजरी में पैदा हुए छह वर्ष के उम्र में कुराने मजीद हिफ्ज कर लिया। उसके बाद उलूमे जाहरी हासिल करने के तरफ ध्यान दिया और बहोत थोड़ी उम्र में उनसे फरागत हासिल कर ली। उसके बाद उलूमे बातिनी हासिल करने की कोशिश शुरू की और अपने वालीद माजीद हजरत ख्वाजा अबु युसूफ रहअलैह के मुरीद हुए बातिनी कमालात हासिल करने के बाद छब्बीस साल की उम्र में खिरकए खिलाफत पहना तारीख के मुताअला से पता चलता है और बयान किया जाता है के जो शख्स भी हजरत ख्वाजा मौदूदी की खानकाह में रहता था वो साहिबे करामत वली हो जाता आप को फाकाकशी बहुत पसंद थी और फरमाया करते थे 'दूरवेश को फाकाकशी से कशाकश (समानता) हासिल होती है। हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती रहः अलैह सन्तान्वे साल की उम्र पाई और पांच सौ सत्ताइस हिजरी को रप्पले बा-हक हुए और मुकामे चिश्त में मदफून हुए आपके खुल्फा की तादाद बहुत थी जिसमें मशहूर ये हैं :-

१. हजरत ख्वाजा हाजी शरीफुद्दीन जिंदानी रह अलैह
२. हजरत ख्वाजा शाह सुलेमान रहमतुल्लाह अलैह
३. हजरत ख्वाजा अबुल हसन रहमतुल्लाह अलैह
४. हजरत ख्वाजा अबूल खरकानी रहमतुल्लाह अलैह
५. हजरत ख्वाजा हसन तिब्बती रहमतुल्लाह अलैह
६. हजरत ख्वाजा अहमद हस्नी रहमतुल्लाह अलैह
७. हजरत ख्वाजा अबूनूस शकीवां रहमतुल्लाह अलैह
८. हजरत ख्वाजा शेख हुसैन रहमतुल्लाह अलैह
९. हजरत ख्वाजा शाम रहमतुल्लाह अलैह
१०. हजरत ख्वाजा शब्जपोश रह अलैह
११. हजरत ख्वाजा अब्दुल्लाह चिश्ती शेखपूरवी रह अलैह

आप ही के औलादों में हैं।

- सैय्यद मोहम्मद वासिफ

हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रहमतुल्लाह अलैह

आप हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज रदिअल्लाहो अन्हो जैसे ताजदारे रुहानियत के पीरोमुर्शीद हैं। जिससे ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो की अजमत व जलाल का अंदाजा बखुबी किया ज्ञा सकता है।

आपका इसमें गिरामी 'उस्मान' और 'कुन्नियत' अबुन्नुस' थी! सादात के एक इज्जतदार घराने से तआलुक रखते थे। इनका सिलसिलए नसब ग्यारह वास्तों में हजरत अली रदिअल्लाहो अन्हो से निकला है। आप ५२६ हिजरी में पैदा हुए आप अपनी इब्तिदाई तालीमो तर्बियत वाल्देन के साए में पाई। आपने बचपन ही में कुरान पाक हिफ्ज़ कर लिया और रोज़ एक कुरान पाक खत्म करते थे। इब्तिदाई तालीम के बाद उस दौर के नामवर उल्माए किराम से उलुमें जाहिरी की तकमील की उलुमें शरीअत में कमाल हासिल करने के बाद उलुमें तरीकत की तरफ मुत्तवज्ञह हुए और हजरत हाजी शरीफुद्दीन जिन्दानी रदिअल्लाहो अन्हो की बैअत से सरफराज हुए वह उस दौर के बड़े मशाएख में से थे। उन्होंने खास तवज्ञह से ख्वाजा उस्मान रदिअल्लाहो अन्हो को अपना 'खरकए खिलाफत' अता किया। और कुलाहे चहार तुर्की उनके सरे अकदस पर रखकर फरमाया है 'ऐ फरजन्द, चहार तुर्की से मुराद चार तर्क हैं' १. अव्वल तर्क दुनिया २. तर्के ख्वाहिशे नफ्स ३. तर्के खुर्द व ख्वाव (खाना व सोना) मगर इतनो के जिन्दगी कायम रखने के लिए जरुरी है। ४. 'तर्क मासिवाए हक' जो इन चारों को तर्क की जाए कुलाहे चहार तुर्की का हकदार होगा।

हज़रत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो ने अपनी उम्र के ७० वर्ष रियाजत में गुजारे। इस लम्बी मुद्दत में आपने ना तो पेट भर खाना खाया और ना रात कभी सोया। लगातार कई-कई दिन रोजा रखते थे और रात दिन इबादते इलाही में मशगुल रहते थे। कलामे इलाही बड़ी कसरत से पढ़ते थे रोज़ाना एक या दो बार कुराने मजीद पूरा खत्म कर लेते थे। कसरते रियाज़त व मुजाहिदात की बदौलत जबरदस्त रुहीनी कुव्वत हसिल हो गई थी। और अपने दौर के नामवर औलिया में शुमार होते थे। अपने मुर्शीद की हमराही में और तन्हा सैयाहत भी बहुत की।

हज़रत ख्वाजा उस्मान हारुनी के कसरत के साथ करामात मशहुर थे उनमें से कुछ ये हैं-

एक बार सत्तर आदमी एक जगह जमा थे। हज़रत ख्वाजा उस्मान हारुनी की करामात का जिक्र छिड़ गया। कुछ लोग उन्हें मानने से इंकार करते थे। आखिर उनमें आपस में यह तय पाया कि अगर उनमें से हर एक को ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो ने उसकी मर्जी के मुताबिक खाना खिलाया तो हम उनकी अजमत को तसलीम कर लेंगे। चुनांचे जब यह लोग ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो की खिदमत में हाजिर हुए तो आपने उन्हें अपने सामने बिठाया और 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर बारगाहे इलाही में दुआ मांगी। एकाएक गैब से दस्तरखान तरह-तरह के खानों के साथ नमुदार हुए और हर शख्स के सामने उसकी मर्जी के मुताबिक खाना रख दिया गया। यह देखकर वह लोग सकते में आ गए और फौरन ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो की कदमबोसी करके बैअत से मुशर्रफ हुए। एक बार सयाहत के दौरान ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो का गुजर आतिश परस्तों के एक बड़े पूजा स्थान पर हुआ। उसके अंदर उन्होंने खुब आग रौशन कर रखी थी। यह आतिशकदा एक पुरफज़ा मुकाम पर स्थित था हजरत उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो ने खुद्दाम के हमराह उसके करीब ही कयाम फरमाया शाम हुई तो आपने-अपने खादिम फखरूद्दीन को हुक्म दिया कि आग लाओ और खाना पकाओ खादिम आग लेने आतिशकदे के तरफ गया तो आतिशपरस्तों ने उसे आग लेने से रोक दिया और कहा यह आग तो हमारा माअबुद है हम तुम्हें कैसे दे सकते हैं? खादिम ने वापस आकर हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो से सारी कैफियत बयान की। ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो यह सुनकर फौरन खादिम के साथ खुद आतिशकदा के पास तशरीफ ले गए और आतिशपरस्तों को मुखातिब होकर फरमाया।

दोस्तों/मअबुद हकीकी तो वह जाते इलाही है। जिसने हम सब और इस आग को पैदा किया है तुम पर अफसोस है कि उस जाते हकीकी को छोड़कर उसकी मखलुक की इबादत करते हो। अब तुम अपने इस गुनाह से बाज आ जाओ तो दोजख की आग से बच जाओगे। आतिशपरस्तों पर हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो की गुफ्तगु का कुछ असर ना हुआ। बल्कि उनका बड़ा पुजारी (पुरोहित) कहने लगा भाई तुम कैसी बातें करते हो आग तो हमारी निजात का जरिया है। इसकी इबादत छोड़ भला हम कैसे निजात पा सकते हैं।

हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो ने फरमाया अगर आग वाकई तुम्हारी निजात देहिन्दा (मुक्तिदाता) है, तो उसमें अपने हाथ डाल कर दिखाओ। अगर वह जलने से महफुज रहा तो फिर भी कई बात है पुजारी हजरत उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो की बात सुनकर खामोश हो गया। उसकी गोद में एक नन्हा बच्चा बैठा था। उसकी तरफ ध्यान देने लगा और फिर कहने लगा आग का काम तो जलाना है। भला यह कैसे हो सकता है कि कोई अंग उसमें डाला जाए और वह जलने से महफुज रहे। हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो ने फौरन उस बच्चे को छिन लिया और 'कुरान पाक की आयत' (तर्जुमा) हमने (अल्लाह ने) कहा ऐ आग ठण्डी हो जा और सलाम वाले हो जा। पढ़ते हुए आग में कुद पड़े। वह एक बहुत बड़ा आतिशकदा था और उसमें हजारों मन लकड़ी जल रही थी। हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो और वह बच्चा आग के शोलों में गुम हो गए आतिशपरस्तों ने सोचा जलकर राख हो गए होंगे। उन्हें सदमा था तो सिर्फ अपने बच्चे का। इधर हजरत उस्मान हारुनी के खुद्दाम आपकी सलामती के बारे में फिक्रमंद थे। काफी देर के बाद हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो बच्चे समेत सही व सलामत आग से बरामद हुए। आतिशपरस्त ये हैरतनाक करामत देखकर, भौंचक रह गए और उनके दिल से कुफ्रोशिर्क की स्याही धुल गई। उन्होनें हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो से पूछा 'यह क्या चीज है जिसकी बरकत से आप आग की गर्मी से महफुज रहे? हजरत उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो ने फरमाया यह अल्लाह पर यकीन कामिल और इस्लाम की बरकत है। आतिशपरस्तों ने अब आपक से तौहीद और इस्लाम की हकीकत पूछी आपने उन्हें निहायत सादा तरीके से इलाम और इमान की हकीकत समझाई उसका असर यह हुआ कि उन सबने उसी वक्त इस्लाम कुबुल कर लिया। और फिर हजरत के हाथों बैअत की।

हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो अन्हो की विसाल ६९६ हिजरी में हुई। बहरहाल आपने बड़ी लम्बी उम्र पाई आखिर उम्र में मक्कए मुअज्ज़मा में गोशेनशीन हो गए थे और वहीं विसाल पाई।

- डॉ. मो. अकबर

हमदर्द दवाखाना रायपुर

ख़्वाज़ा गरीब नवाज़ की बारगाह में अपना सर झुकाने पर फख्र और खुशी महसूस करते हैं।

अजमेर शरीफ हिन्दुस्तान का बहुत ही पुराना और तारीखी शहर है। लेकिन जिस दिन से सुल्तानुल हिन्द हजरत ख्वाजा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ने इस शहर की धरती पर अपना नूरानी और बरकत वाला कदमे नाज रखा है इस दिन से इस शहर की अहमियत और हैसियत में चार चांद लग गए। दुनिया-ए-इस्लाम में अजमेर शरीफ एक जाना पहचाना नाम और अकीदतों मोहब्बत का ऐसा मरकज है जहां वक्त के सलातीन, बादशाह, अमीर गरीब सभी अपनी जबीने अकीदत को झुकाने में फख्र, खुशी और फरहत महसूस करते हैं। हम तो हम गैरों ने भी हमारे ख्वाजा गरीब नवाज की गरीब नवाजी की तारीफ इन अल्फाजों से की है कि, आप सुने और अपने ख्वाज़ा की शान पर फख्र करें।

हिन्दुस्तान में बरतानवी हुकूमत के वाइस राय मस्टिर लार्ड कर्जन ने यूं कहा "मैंने अपनी जिन्दगी में दो बुजुर्ग ऐसे देखे हैं जो अपनी वफात के बाद भी लोगो पर इस तरह हुकूमत कर रहे हैं गोया वो नफ्से इन में मौजूद हैं। इनमें एक ख्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी अलैहिर्रहमा और दूसरे शहंशाह औरंगजेब आलमगीर अलैहिर्रहमा।"

सिखों के पेशवा गुरू गोविन्द सिंह

अपनी बीमारी से आज़िज़ (तंग) आकर बारगाहे सुल्तानुल हिन्द में यूँ दुआ करते हैं। "आप हिन्दुस्तान के महाराजा हैं, हम आपकी प्रजा हैं, मेरी ओर भी एक नज़र करम की"।

मोहनदास करमचन्द गांधी

अपनी किताब में ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा की बारगाह में हाज़िरी का इस तरह ब्यान करते हैं।

"यहाँ आकर मेरी रूह को बड़ा चैन मिला, हमें खेद है कि भारतवासियों ने हज़रत ख़्वाजा साहब की जिन्दगी को आदर्श नहीं बनाया। आपने आत्मा (रूह) की रौशनी को बाकी रखने के लिए जो पैगाम दिया उसे कोई नहीं सुनता। आपने सच्चाई के हथियार से लोगों का हृदय (दिल) जीत लिया है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भूतपूर्व राष्ट्रपति)

ख्वाज़ा की जिन्दगी रौशनी का मीनारा थी जिसने दूर-दूर तक उजाला फैला दिया। ये रौशनी दिल के अंधेरों को चीरती हुई दिलों में ऐसा उतर गयी कि लोग हैरान हैं।

गुलजारीलाल नन्दा

ख्वाजा गरीब नवाज आज भी गरीबो को क्या बादशाहों को भी नवाज़ते हैं।

पं. जवाहरलाल नेहरू (भूतपूर्व प्रधानमंत्री)

पं. जवाहरलाल नेहरू ख्वाज़ा की बारगाह में हाज़िरी देने आए तो यूँ कहाँ : ऐसे ही पवित्र स्थानों से हिन्दू-मुस्लिम एकता की शिक्षा मिलती है।

आचार्य विनोबा भावे

अगर हम ख़्वाज़ा साहब के उपदेश को मान लें तो हम सारी इन्सानियत को संवार सकते हैं।

पं. सुन्दरलाल

गरीब नवाज़ ने मोहब्बत की बुनियाद पर अपने फ़िक्रो अमल की इमारत तामीर की है वो एक मजबूत किला की तरह अपने गोद फैलाए हुए आज भी भटके हुए लोगों को पुकार-पुकार दावत दे रही है कि इन्सानियत ही सब बातों का निचोड है।

राजीव गांधी (भूतपूर्व प्रधानमंत्री)

अजमेर में दरगाह गरीब नवाज़ पर आकर एक दिली सुकून महसूस किया।

चन्द्रशेखर

यहां आकर बड़ी खुशी हुई। बड़ी पाक जगह है। जिससे सारी कौम को ताकत मिलती है।

प्रो. वाल्ट ए.डी.

ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के प्रोफेसर वाल्ट ए.डी. अजमेर में दरगाह पर हाजिर होकर यूँ कहा :

अगर किसी को कहीं से कुछ भी न मिले तो वो हिन्दुस्तान में गरीब नवाज़ की चौखट पर जाए और ले आए।

ये सिलसिला कभी खत्म होने वाला नहीं है लोग आते रहेंगे और अपनी बोलियाँ बोलते रहेंगे। ये तो हमारे दिने-इस्लाम की शान है कि वो गैर मुस्लिमों से भी अपनी तारीफो तौसीफ करा लेती है।

हज़रत ख़्वाज़ा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा बज़ाहिर हम में मौजूद नहीं या यूँ कह लीजिए कि हमारी इन आँखों से आप का नूरानी वजूद पर्दे में है लेकिन ये बाद रोज़े रौशन की तरह अयाँ है कि आज भी आप उसी तरह गरीब नवाज़ी, मेहमान नवाज़ी, हाजत रवाई दस्तगीरी और फरियाद इसी फरमा रहे है जिस तरह कि आप अपनी ज़ाहिरी जिन्दगी में फरमाते थे।

- मोहम्मद हुसैन "राजा"

हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ का फरमान नमाज़ एक राज़ है जो बन्दा और खुदा के बीच है

हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ने फरमाया, नमाज़ मोमिन की मेअराज़ है, नमाज़ एक राज़ है जो बन्दा और खुदा के बीच है। नमाज़ मोमिन के लिए खुदा की अमानत है। बस चाहिए कि खुदा की अमानत में खयानत न करें यानि जिस तरह नमाज़ पढ़ने का हक है उसी तरह उसको अदा करें। फिर फरमाया "मैंने अपने ५.र तरीकत हज़रत ख्वाज़ा उस्मान हारूनी अलैहिर्रहमा से सुना है कि कयामत के रोज सब से पहले नमाज़ का हिसाब अंबिया, अवलिया और हर मुसलमान से होगा, जो इस हिसाब में खरा नहीं उतरेगा वो अजाबे दोज़ख का मुस्तहिक होगा। क्योंकि नमाज़ दीन का रूक्न है और रूक्न सुतून होता है, पस जब सुतून कायम हो गया तो फिर समझो कि मकान भी कायम हो गया अब इस मकान को और दीगर अमल से सजाओ सँवारों ताकि कामयाब हो जाओ।"

सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ने फरमाया कि "मैंने अपने पीरे कामिल हज़रत ख्वाजा उस्मान हारूनी अलैहिर्रहमा से सुना है कि कयामत के दिन जो मुसलमान नमाज़ की जिम्मेदारी से छूट गया, बारगाहे इलाही में वही सुरखुरू होगा, वरना जहन्नम का ईंधन बनेगा।" साथ ही ये भी इर्शाद फरमाया कि "एक दफा मैं मुल्के शाम के एक शहर में मुकीन था। उस शहर से बाहर एक गार (पहाड़ी की खोह) में एक बुजुर्ग शैख उहद मोहम्मद अब्दुल वाहिद अज़ीज़ी रहते थे। उनके जिस्म की कमजोरी का ये आलम था कि बदन की एक-एक हड्डी गिनी जा सकती थी, मैं उनसे मुलाकात के लिए गया। तो देखा कि वो मुसल्ला पर बैठे हैं और दो शेर उनके सामने खड़े हैं। मैं शेरों के खौफ से ठहर गया। शेख अज़ीज़ी की नज़र मुझ पर पड़ी तो फरमाया "अन्दर आ जाओ डरो मत" मैं गार के अन्दर दाखिल हुआ और शेख अज़ीज़ी को सलाम करके बाअदब बैठ गया। शेख अज़ी ने फरमाया "तुम किसी को नुकसान पहुँचाने का इरादा न करो तो कोई चीज़ तुम्हें भी नुकसान नहीं पहुँचाएगी। जो शख्स खुदा से डरता है उससे हर चीज़ डरती है। शेर क्या चीज़ है।" फिर मुझसे पूछा "कहाँ से आए हो।" मैंने कहाँ, "बगदाद से" तुम्हारा आना मुबारक. दरवेशों की खिदमत किया करो, तुम्हें इसका फल मिलेगा और मेरी सुनो मैं कई साल से दुनिया से तअल्लुक तोड़ कर इस गार में पड़ा हूँ। और तीस साल से एक चीज़ के खौफ से हमेशा रोता रहता हूँ। मैंने पूछा "वो क्या चीज़ है।" शेख अज़ीज़ी ने फरमाया, वो नमाज़ है, मुझे हर वक्त यही खौफ रहता है कि कहीं कोई एक भी शर्ते नमाज़ हमसें छूट न जाए। और मेरी सारी इबादत मेरे मुँह पर मार दी जाए। ऐ दरवेश अगर तुमने नमाज़ का पूरा पूरा और सही तरीके से हक अदा किया तो वाकई तुमने बड़ा काम किया वरना सारी उम्र गफलत और बेकारी में बरबाद कर दी। खुदा के नज़दीक नमाज़ छोड़ने से बढ़कर कोई दूसरा गुनाह नहीं, और नमाज़ छोड़ने वाला खुदा का दुश्मन है। और यही खुदा के दुश्मन दोजख का पेट भरेंगे। और मुझे जो इस तरह कमजोर देखते हो उसकी सिर्फ यही एक वजह है कि मैं खौफे खुदा से हर वक्त नमक की तरह घुलता रहता हूँ कि ना मालूम मैंने नमाज़ का हक जैसा अदा करना चाहिए था किया या नहीं।"

इसके बाद शेख अजीज़ी ने मुझे ताकीद की नमाज़ का सही हक अदा करते रहना।

जिस वक्त ये वाकिआ सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा बयान फरमा रहे थे, खौफे खुदा से आप की आँखे छलक रही थी और आपके रूखसार पर आँसू छलक रहे थे। हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ने फरमाया "मेरे अज़ीज़ दोस्तों नमाज़ दीन का सुतून है और दीन जिसने नमाज छोड़ दी उसने गोया दीन का सुतून ढा दिया और जिसने सुतून ढा दिया उसने अल्लाह के दीन को ढा दिया। हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ने अपनी हर मजलिस में नमाज़ पर बहुत ज़ोर दिया और जगह-जगह ताकीद फरमाई है।

लेकिन बड़े ही अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हम अपनें आपको हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ का शैदाई (चाहने वाला) बताते हैं उठते बैठते और हर मुश्किल में या ख्वाज़ा अलमदद की रट लगाते हैं, अजमेर शरीफ भी जाते हैं। ख्वाज़ा गरीब नवाज़ के नाम पर खूब लंगर लूटाते हैं, चादर शरीफ निकालते हैं, लेकिन आपका फरमान नहीं मानते। जहाँ नमाज़ की बात आती है तो चुप्पी साध लेते हैं गोया हमारे बदन में जान ही नहीं है।

आप ज़रा ठंडे दिल से सोचें कि हम जिससे अपनी मोहब्बत और अकीदत का दावा कर रहे हैं क्या उनके किए हुए या बताए हुए अमल या हुक्म पर चल भी रहे हैं।

गौसे आज़म व ख्वाज़ा के दीवानों हम जिनकी गुलामी पर नाज़ करते हैं, जिन्हें अपना पेश्वा, रहबर मानते हैं, जिन्हें खुदा और हुजुर सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम की बारगाह में वसीला बनाते हैं, जिनके आस्ताने पर जाकर हम अपनी मुरादों के पूरा होने की दुआ करते हैं। क्या हम उनसे मोहब्बत रखने का हक अदा कर पाते हैं। तमाम औलिया अल्लाहो ने जो मरातिब हासिल किए हैं वो नमाज़ और इश्के रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की ही बदौलत हासिल किए हैं। और सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फरमान है कि "नमाज़ हमारे आँखों की ठंडक है।" नमाज़ मोमिन की मेअराज है। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपनी गुलामी का सुबूत देते हुए खुदा की खास इबादत यानी नमाज़ के पाबन्द बन जाएँ। आमीन।

हज़रत ख्वाज़ा गरीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ने मजलिस का आगाज़ इस तरह फरमाया - अहले सुलूक के नज़दीक पांच चीजों की तरफ देखना अैन इबादत है।

१. मोहब्बत से अपने माँ-बाप का चेहरा देखना।

२. कुरान शरीफ को देखना।

३. ओलमा-ए-किराम को इज़्ज़त की नज़र से देखना।

४. खान-ए-खुदा यानी काबा शरीफ को देखना।

५. अपने पीरो तरीकत को अकीदतो मोहब्बत से देखना।

शहंशाहे हिन्द - हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

छठी सदी हिजरी में एक ऐसे काएदे आज़म-दीनी रहनुमा मखलूक, नवाज़, मुशफ्फक और अल्लाह के नेक बन्दे की जरूरत थी जो लोगों को नेकी की राह दिखाये, मुहब्बत का सबक पढ़ाये और शमए नूरे मुहम्मदी को रौशन करके - मुल्के हिन्दोस्तान के अवाम को जामे मुहब्बत पिलाकर दिलों की प्यास बुझाये।

छठी सदी हिजरी में एशिया के मुख्तलिफ मकामात पर अल्लाह के नेक बन्दों इल्मों - अमल की कुवतो के साथ अपने नूरे हक से मुल्क के चप्पा-चप्पा को मुनौव्वर फरमा रहे है। दमिश्क, इराक, शाम, खोरासान, ईरान, पंजाब, अफगानिस्तान, समरकन्द, बुखारा की सर ज़मीन को खुदा के ऐसे ही बरगोजीदा बन्दों की कदम बोसी का शरफ हासिल हो चुका।

यूं तो ग़ज़नवी दौरे हुकूमत के मुसलमान हमारे मुल्क हिन्दोस्तान के बाज़ शहरों में आबाद हो चुके थे। तारीख मशाएखे चिश्त के मुताबिक - बदाऊँ, नागौर, कन्नौज, वगैरह में मुस्लिम कौम आबाद हो चुकी थी। मगर लोगों को इंसानियत का सबक नहीं मिला था, ये शरफ और ये एजाज़ सिर्फ रूहानी शहेन्शाहे हिन्द हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ ही को हासिल हुआ हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज़ ने सब से पहले पंजाब और देहली से आगे बढ़कर- राजपूताना के रेग़िस्तान यानी अजमेर शरीफ में तकरीबन चालिस साल तक अवाम को नेकी का सबक पढ़ाया, मेल-मिलाप के रास्ता पर चलाया, जुल्मों-सितम से बाज़ रखा - ग़रीब नवाज़ ने इस चालिस साला दौरे हयात में मुल्क के हरगोशा और हर चप्पा को शमए नूरे मुहम्मदी और चिश्ती किरनो से मुनौव्वर कर दिया। आवाम बिला तफरीक मजहबों मिल्लत जूक दर जूक आपकी खिदमते अकदस में हाज़िर हों और चिश्ती ताजदार का पैग़ामें मोहब्बत सुनकर अपने कल्ब की तिश्नगी को बुझाते रहे।

हुज़ूर हज़रत ख्वाजा ग़रीब नवाज़ ऐसे मुशफ्फक नवाज़ थे कि आपको जो भी नुकसान पहुँचाने कि नियत से आतो वो खुद अपने हथियार फेंककर तरानाए वहदानियत से अपने कल्ब और रूह से इस्लाम की तरफ माइल हो जाता और दायरा-ए-गुलामी में आ जाता। ख्वाज़ा-ए-आज़म का मस्लक-दर बेगाना था। कभी किसी बन्दा-ए-खता पर किसी किस्म का तशद्दुद और गुस्सा नही फरमाया।

हुज़ूर सरकार ग़रीब नवाज़ ने इस्लाम और खिदमते इस्लाम को कभी फ़रामोश नहीं फरमाया। शरीयत के मतवाले और कानूने कुदरत के पाबन्द रहे।

हुज़ूर ख्वाजा ग़रीब नवाज़ का मकसदे हयात-इन्सान को - इन्सान अमील बनाता रहा। आपका पैगाम हकीक़त में एक पैगामें मोहब्बत होता था। जिनके कानों तक आपे के पैगाम कि आवाज पहुँची, वोह अपने किरदार कि इसलाह करने कि तरफ रागिब हो गया।

यही वजह है कि आपकी बारगाह पर हर मज़हबों मिल्लत के लोग हाज़िर हो कर फैज़े ज़ाहरी व बातनी से फाइदा हासिल करते जा रहे है। आपकी लाफानी मोहब्बत की कशिश न सिर्फ हमारे मुल्क हिन्दोस्तान बल्कि बैरूने हिन्द के लोगों को भी अपनी आगोशे रहमत में खींच लेती है हर मज़हब और हर ख्याल के अफराद दूर-दराज मकामात से आते है और आप के दरबार में अकीदत के नज़र पेश करते हैं।

पारसी कौम यहाँ घी के चराग जलाकर कल्बी, रौशनी हासिल करती है। हिन्दु और ईसाई कौम-मालों दौलत सर्फ करके नज़रे अकीदत पेश करके माला-माला होती है।

सिख कौम यहाँ हाज़िर होकर अपनी मोहब्बत का सुबूत देती है। और मुस्लिम कौम यहाँ शरफे अकीदत से फैजियाब होती है। हुज़ूर ख्वाजा ग़रीब नवाज़ कि ये बारगाह है जो आज तकरीबन ८ सौ साल से मरजये वला एक है जहां हमा वक्त नुजूले रहमत हुआ करता है।

इंशाअल्लाह ख्वाजा ग़रीब नवाज़ के ७८६ वाँ उर्स मुबारक के मौके में अल्लाह अपने प्यारे हबीब के सदके से हमें ख्वाजा की चौखट चूमने की तौफ़िक अता फरमायें।

- अकबर अशरफी
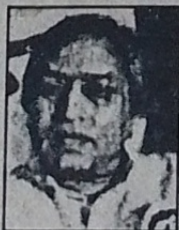
हजरत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल्लाह चिश्ती मौदुदी रहमतुल्लाह अलैह खानकाह चिश्तिया शेख पुरा नवादा 'बिहार'

हिन्दुस्तान खुसुसन सूबा बिहार सूफिया ए. किराम और बुजुर्गाने दीन का मसकन रहा है। इन्हीं बुजुर्गों में एक बुजुर्ग हजरत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल्लाह चिश्ती मौदूदी रहमतुल्लाह थे। आपका नसल आठ पुस्तों में हजरत ख्वाजा सैय्यद कुतुबुद्दीन मौवदूद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह से आकर मिलता है। जो कि हजरत ख्वाजा ए ख्वाजगान ताजदारे हिन्दुस्तान हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के पीरो मुर्शीद के पीरो मुर्शीद के पीरो मुर्शीद है। सूबा बिहार में खानकाह चिश्तियां मौवदूदिया वाहिद रूहानी मर्कज का केन्द्र है जिसका खानदानी ताअल्लुक सिलसिला ए चिश्तियां के बानी हजरत ख्वाजा सैय्यद कुतुबुद्दीन मौवदूद चिश्ती रहमतुल्ला अलैह से जाकर मिलता है।

हजरत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल्लाह चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने उस पूराशोब दौर में रुहानियत कि शमा (चिराग)रौशन की जबकि हिन्दुस्तान कि फिज़ा पर कुफ्र वोशिक जुल्मोसितम, मारधाड व बुतपरस्ती की तेज आंधिया चारों तरफ उठ रही थी ये आठवीं सदी हिजरी का दौर था व सुल्तान तुगलक का जमाना यानि (राजपाट) था।

हजरत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल्लाह चिश्ती रहमतुल्ला अलैह भक्खर जो मुकाम शहर चिश्त के करीब आवाद था वहां आप अपने बाल बच्चों के साथ रुखसत होकर बिहार शरीफ में हजरत मखदूमुल मूल्क शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह के पास आए और कई वर्षों तक तालिम व तरवियत रुस्तदो हिदायत से फैजयाब हुए फिर मखदुमुल मुल्क ने इरशाद फरमाया के यहां से जुनुब 'दक्खिन' की तरफ रवाना हो जाए और मेरा असॉ (लाठी) लेते जाए जहां यह लाठी गाडने से चश्मा (पानी) जारी हो जाए वही आपका मसकन (मुकाम) होगा।

आप मखदुमुल मुल्क के हुक्म से बिहार शरीफ से दक्खिन के जानिब रवाना हो गए। पहली मंजिल खरांट नामी गांव था जहां आपने रात गुजारी लेकिन वहां कोई अलागत जाहिर ना हुई फिर आप वहां से चौदह कोस जुनुब की तरफ बढे और गैर आबाद बस्ती (इलाका) को सजदारेजी यादे हक और दावते तब्लीग के लिए पसंद फरमाया। और रात के बाद सुबह में वो बाते जाहिर हो गई जो मखदुमुल मुल्क ने फरमाया था यानि सुबह के वक्त मिस्वाक व असां (लाठी) को जमीन पर गाढा गया था और वो मिस्वाक हरी हो गई व लाठी जहां गड़ी थी वहां से पानी के आसार नमुदार हुए और पानी जारी हो गया आज भी बड़ा कुआं मौजूद है। जो (ख्वाजा कुआं) के नाम से मशहूर है। लोग आज भी दूर-दराज से वहां आते हैं। और उसका पानी बीमारी से सिफा पाने के लिए इस्तेमाल करते है। उस कुएं के पानी में वो तासिर है जैसे ही बीमार आदमी वो पानी इस्तेमाल करता है वह तमाम बीमारियों से सिफा पा जाता है।

हजरत सैय्यद ख्वाजा अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह जुनुब (दक्खनि) में ही मुस्तकील सुकुनअत इख्तेयार कर ली और यादे इलाही में मशगुल हो गए।

कुछ दिनों के बाद आपके वालिद माजिद हजरत ख्वाजा असद उल्लाह चिश्ती सुल्तान कुंजनशी आप की जुदाई बर्दाश्त ना कर सके, लेहाजा आप भक्खर से रवाना होकर आपको तलाश करते हुए बिहार शरीफ पहुंचे और फिर वहां से आपके पास जुनुब (दक्खिन) पहुंच गए और आपके पास ही रहे उसके बाद जिक्र व फिक्र तालिम व तलकीन और रुशदो हिदायत का एक नशेमन कायम हो गया। वहां आपके मुकाम से एक बस्ती कायम हो गई और वह बस्ती अब शेखपुरा के नाम से मशहुरों मारुफ हुई ये एक शहरनुमा बस्ती है। नवादा जिला के हिसवा ब्लॉक से तकरीबन दो मील जुनुब (दक्खिन) की तरफ लबे सडक आबाद है। शेखपुरा नवादा बिहार में खानकाह चिश्तियां की बुनियादी तकरीबन छह सौ साल से कायम है और इस खानकाह से सज्जादगान नसलन बादा नसलीन (पुस्तदर पुस्त) इसी खानदान से होते चले आ रहे हैं। और अब तक आपकी औलाद मालकाना हैसियत से इसी बस्ती में आवाद है। और आपकी मजारे फैज भी इसी बस्ती मे खासो आम है।

आपके पोते हजरत ख्वाजा हाजी ताजमहमूद हक्कानी जिनको इल्मों फजल में कमल हासिल था। तारीख के हवाले से पता चलता है कि हजरत ताजमहमूद हक्कानी रहमतुल्ला अलैह ने शेखपुरा से मुता-वातिर कई बार हज्जे बैतुल्लाह का सफ्र हासिल किया। आपका मजारेपाक भी इसी बस्ती में मोहल्ला छोटी दरगाह में स्थित है। आप बड़े ही करामाती बुजुर्ग है।

खानकाह चिश्तियां शेखपुरा से सैकड़ों बुजुर्गानि दीन पैदा हुए जिन्होंने शम्ए हिदायत की चिराग से दुनिया को रौशन किया और आज तक फैजयाब कर रहे हैं।

इस खानकाह से तेरहवें सज्जादा नशीन हजरत सैय्यद शाह सुल्तान अहमद चिश्ती रहमतुल्ला अलैह सूबा बिहार के एक मशहूर और मारुफ सूफी बुजुर्ग गुजरे हैं। इसी खानकाहे से चौदहवें सज्जादा नशीन हजरत सैय्यद शाह कुतुबुद्दीन अहमद चिश्ती रहमतुल्ला अलैह जैईद आलिम सूफी बुजुर्ग और निहायत शरीफुन नफ्स इंसान थे। हजरत शाह साहेब की पूरी जिन्दगी इत्तेबाय सुन्नते नवबी और बुजुर्गों के नक्शे कदम पर गुजरी को हर शख्स से खुलुसो मोहब्बत से पेश आते थे और मेहमान नवाजी सादगी पसंद के वुसुल पर कारबंद (तैयार) रहते थे। अल्लाह तआला ने अपने इस खासबन्दे पर ये फजल फरमाया था कि आपकी जबान में वो तासिरअता फरमायी थी कि आपके हुजर के करीब अमराजे रुहानी व जिस्मानी मरीजों का तातां बंधा रहता था जो भी आपके दर पर आता वो रुहानी जिस्मानी बीमारियों से सिफा पाता था।

हर साल की चौदह रज्जब को खानकाहे चिश्तियां शेखपुरा नवादा में हजरत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल्लाह चिश्ती मौदूदी रहमतुल्लाह अलैह का उर्स का चिरागा बड़े ही शानो शौक्त के साथ होता है। और साथ ही मौजूद। सज्जादा नशीन हजरत मौलाना अल्हाज सैय्यद ऐनुद्दीन चिश्ती के वलिद माजिद हजरत सैय्यद शाह कुतुबुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह और दादा हुजूर हजरत सैय्यदशाह सुल्तान अहमद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का उर्सेपाक भी इस मौके पर (चौदह रज्जब) को अंजाम दिया जाता है। उर्सपाक के मौके पर अजीमुशान सीरते पाक का जलसा और मजलिसे शमा मुनक्कीद होती है। हजारों की तादात में बिलाह तफरीक मजहबो मिल्लत हिन्दू-मुसलमान सभी अकीदतो मोहब्बत के साथ शरीक ए उर्स होते हैं और बुजुर्गानि शेखपुरा के फोयूज का बरकात से मालामाल होते हैं। उर्सपाक के मौके पर कौमी एकता का नजारा देखने को मिलता है।

इस खानकाह के मौजूदा सज्जादा नशीन मौलाना अलाज सैय्यद ऐनुद्दीन चिश्ती एक जैईद आलीमदीन है व एक बेहतरीन और मुखतलिक किताबों के मुसन्नीफ है। अलगरज हजरत ख्वाजा सैय्यद अब्दुल्ला चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह कि खानकाह मुकद्दस से सैकड़ों बुजुर्गानेदीन नेतरिबियत पाई और पूरी दुनिया में दावते तब्लीग से कामों को अंजाम दिया। खुदा इस खान वादे को दीन व दुनिया की खैरोबरकत से मालामाल करे और इस खानकाहे चिश्तिया शेखपुरा नवादा को ता कयामत कायम रखे ताकि खैरोबरकत का ये चश्मा सदा जारी व सारी रहे आमीन।

- डॉ. सैय्यद नुरूलहुदा सम्सी
पटना (बिहार)

पयामे ईद

सारे आलम का दस्तूर है कि वो साल की मखसूस तारीखों में आपना कौमी व मज़हबी जश्न करती है कोई मौसमों की तब्दीली पर मर्सरतों का इज़हार करती है कही कौमी रहबरों और मुनतखब शख्सियतों के साथ हुस्ने अक़ीदत का मुज़ाहिरा मेलो की सूरत में होता है किसी ने आरिज़ व समा के फितरी इनक़ेलाव को अपने ऐश व निशात का महवर क़रार दिया है लेकिन इस्लाम ने जहाँ हयात इंसानी का संवारने के लिये पैदाईश से लेकर मौत तक के उसूल व क़वानीन को पेश किया है वहाँ जश्न मनाने और फरहत व सुरूद के इज़हार के लिये भी एक ज़ाबता मुक़र्रर फरमाया है।

आमतौर पर जश्न दुनियावी लज्जतों और नफसानी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिये होते है मगर मुसलमान की खुशी और ग़मी उसकी मौत व ज़िन्दगी सिर्फ नफस के लिये नही बल्कि माद्दी कुव्वतो को दवाने और रूहानी सलाहियतों को उभारने के लिये होती है उसकी ज़िन्दगी का हर लम्हा इसारे नफ्स व खशियते इलाही पैदा करने की दावत होता है। एक मर्द मोमिन अपने हर कौल व फेअल और अपने हर अज़्म व अमल में सिर्फ मरजी इलाही का ताज होता है। इसीलिये क़ुरआने करीम में फरमाया गया - "ऐ महबूब आप फरमा दीजिये कि मेरी नमाज़ और कुरबानी मेरी जीना और मरना (सब कुछ) अल्लाह रब्बुल आलमेन के लिये है।

जिन्दगी को रज़ाये इलाही के मुताबिक सैर कराने के लिये जरूरत थी उस मुकम्मल कानून की जो तअमीर इन्सानी के लिये अयनारह नूर साबित हो और जिसका हर नुक्ता इंसानी दसतबरद से महफूज़ हो। चुनांचेअल्लाह तआला की वो आखरी और मुकम्मिल किताब रमज़ानुल मुबारक में नाज़िल हुई फरमाया जाता है - इसी मुकद्दस महीने मे वो किताबे मुबीन और नूर सदाक़त अता फरमाया गया। जिसने अक़ायद व आमाल की तमाम ज़ुलमतो को दूर फरमा दिया .... और जिसने बरबरीयत व जेहालत की गुलामी से दुनिया वालों को निजात दिलाई। इसी सआदत उज़मा व दौलते कुबरा की शुक्रगुज़ारी के लिये जश्ने "ईदुल फितर" मनाया जाता है।

रमज़ानुल मुबारक मे मुसलसल रोज़े रखने और शब बेदार रहने से इसार नफ्स तज़किया रूह और अखलाक़ व आदात में जो पाक़ीज़ा इन्केलाब पैदा हुआ है उसे मुल्क व मिल्लत की इसलाह के लिये वक्फ पैदा हुआ है उसे मुल्क व मिल्लत की इसलाह के लिये वक्फ कर देना इंसानियत की सबसे बड़ी खिदमत है। एक मुसलमान दोगाना ईद अदा करके रमज़ान के रोज़े रखने और अदाये तरावीह पर खुदा तआला का शुक्र अदा करता है। वहा वो इस बात का भी अहद करता है कि इस माह मुबारक में जो उमदा खसलतें पैदा हो गई है वो उनको बन्दगान खुदा की इसलाह और दीनो मिल्लत की तरक्की में सर्फ करेगा।

आज जबकि मिल्लते इस्लामिया का सफीना बाद मुखालिफ के तेज व तुन्द झोंकों से दो चार है। नसली व लासानी इख्तेलाफात ने सर उठाया है। कही सुबाई असबियत मुल्क व मिल्लत के शिराजे को मुन्तशिर करने के दर पे है ऐसे नाजुक दौर में हमारी जिम्मेदारियाँ कुछ पहले से ज्यादा हो गयी है और कुव्वत अमल का दायरी वसीअ तर हो गया है। हर वो शख्स जो अपने पहले में दर्दमंद दिल रखता है ये उसका मुक्द्दस फर्ज़ है कि वो तखरीबी सरगर्मियों के इस्तेसाल के लिये कमर बस्ता हो जाये दुख दर्द मे मुबतेला इंसानों की [illegible] व अयानत पर आमदह रहे ज़ुल्म व अदूअन को मिटाने और अदल व इंसाफ को फरोग देने की सर तोड़ कोशिश करे।

इस्लाम ने मिल्लत की बका के लिये जो तबलीगी उसूल मुक़र्रर किया है और अल्लाह तआला ने उम्मते मुस्लिमाँ को इम्तेयाज़ी निशान अता फरमाया है उसे अम्र बिल माअरूफ व नयी अनिल मुनकर से तअबीर किया गया है।

- असलम क़ादरी
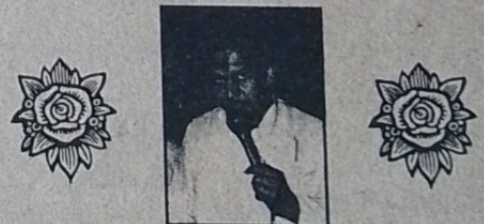
हमेशा के लिए रहना नही इस दारेफानी में
कुछ अच्छे काम कर लो चार दिन की जिन्दगानी में

जो जीते हो तो इस दुनियां में कोई काम कर जाओ
अगर कुछ हो सके तो खिदमते इस्लाम कर जाओ

मोहतरम जनाब............ अस्सलामो अलेकुम

राष्ट्रीय समाचार पत्र **सियासत टाइम्स** रायपुर (म. प्र.) आप तमाम लोगो कि खिदमत में हजरत ख्वाजा गरीब नवाज रदिअल्लाहो तआला अन्हो, हजरत सैय्यद शाह शेर अली आगा बंजारी चौक वाले बाबा व हजरत सैय्यद हाण्डी वाले बाबा की "सवाने हयात" सियासत टाइम्स में प्रकाशित कर आप तमामी लोगो की खिदमत में पेश करने के बाद अब इंशा अल्लाह **16 अक्टूम्बर 99** को आफताबे शरीयत, माहताबे तरीकत, आले मुस्तफा, औलादे मुर्तजा, फरजंदे गौसुल वरा, हुजुर अल्लामा, मुफ्ती अलहाज सैय्यद शाह अबुल मसऊद मोहम्मद मुख्तार अशरफ अशरफी उल जिलानी हुजुर सरकारे कला किछौछा मुकद्दसा की सवाने हयात व हजरत ख्वाजा अब्दुल्लाह चिश्ती मौदुदी रहमतुल्लाह अलेह शेखपुरा नवादा "बिहार" की सवाने हयात का प्रकाशन करने जा रहे है। हुजुर सरकारे कला रहमतुल्लाह अलेह व हजरत अब्दुल्लाह चिश्ती मौदुदी रहमतुल्लाह अलेह से दिलो जान से मोहब्बत करने वालो व उनके चाहने वाले अकीदतमंद हजरत से पुरखुलुश गुजारिश है कि "हुजुर सरकारे कला रहमतुल्लाह अलेह व हजरत ख्वाजा अब्दुल्लाह चिश्ती मौदुदी रहमतुल्लाह अलेह विशेषांक" के लिए मजमून (लेख-रचना) मनकवत, नातेंपाक व अपने कीमती मशवरे से खतो खिताबत (पत्र) के जरिए हमें **7 अक्टूम्बर 99** तक सियासत टाइम्स समाचार पत्र के कार्यालय में भेजकर हमें शुक्रिया का मौका देवें व इस विशेषांक में अपने संस्था फर्म/कारखाना कारोबार का सियासत टाइम्स समाचार पत्र में विज्ञापन प्रकाशित करवाकर हमारी मदद फरमायें। सियासत टाइम्स समाचार पत्र का वितरण मुफ्त में किया जावेगा।

खुदा हाफिज ! सब्बा खेर !!

आपका
रमीज अशरफ
प्रधान संपादक

सलाहकार
जनाब मौलाना अकबर अली साहब
(मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन)

आपका
सबीहउद्दीन चिश्ती
संपादक

नोट :- खतो खिताब (पत्र) इस पते पर करें।
रमीज अशरफ (प्रधान संपादक) सियासत टाइम्स समाचार पत्र
न्यू मोइनिया बेरिंग सेन्टर हजरत हाण्डीवाले बाबा की दरगाह के सामने
के. के. रोड, मौदहापारा रायपुर (म. प्र.)

पंजीयन क्रमांक : MP / HIN / 13934 / 12-1-98 T. C. I.
राष्ट्रीय समाचार पत्र सियासत टाइम्स, रायपुर (म. प्र.) ☎ 224446 537386